विषय-परिचय

पूर्व प्रकाशित छह पुस्तकोंमें षट्खंडागमका प्रथम खंड 'जीवट्ठाण' प्रकट हो चुका है। प्रस्तुत पुस्तकमें दूसरा खंड 'खुद्दाबंध' पूरा समाविष्ट है। इस खंडका विषय उसके नामसे ही सूचित हो जाता है कि इसमें क्षुद्र अर्थात् संक्षिप्तरूपसे बंध अर्थात् कर्मबन्धका प्रतिपादन किया गया है। पाठकोंको इस बृहत्काय ग्रंथमें बन्धका विवरण देखकर स्वभावतः यह प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि इसे क्षुद्र व संक्षिप्त विवरण क्यों कहा? किन्तु संक्षिप्त और विस्तृत आपेक्षिक संज्ञाएं है। भूतबली आचार्यने प्रस्तुत खंडमें बन्धक अनुयोगका व्याख्यान केवल १५८९ सूत्रोंमें किया है जब कि उन्होंने बंधविधानका विस्तारसे व्याख्यान छठे खंड महाबन्धमें तीस हजार ग्रंथरचना रूपसे किया। इन्हीं दोनों खंडोंकी परस्पर विस्तार व संक्षेपकी अपेक्षासे छठा खंड 'महाबन्ध' कहलाया और प्रस्तुत खंड खुद्दाबंध या क्षुद्रकबन्ध।

खुद्दाबन्धकी उत्पत्ति प्रथम पुस्तककी प्रस्तावनाके पृ. ७२ पर दिखाई जा चुकी है और उसके विषय व अधिकारोंका निर्देश उसी प्रस्तावनाके पृष्ठ ६५ पर दिया गया है। उसके अनुसार बारहवें श्रुतांग दृष्टिवादके चतुर्थ भेद पूर्वगतका जो दूसरा आग्रायणीय था उसकी पूर्वान्त आदि चौदह वस्तुओंमेंसे पंचम वस्तु 'चयनलब्धि' के कृति आदि चौवीस पाहुडोंमेंसे पाहुड बन्धन के बन्ध, बन्धनीय, बन्धक और बन्धविधान नामक चार अधिकारोंमेंसे 'बन्धक' अधिकारसे इस खंडकी उत्पत्ति हुई है।

कर्मबन्धके कर्ता हैं जीव जिनकी प्ररूपणा जीवट्ठाण खण्डमें सत् संख्या आदि आठ अनुयोग द्वारोंके भीतर मिथ्यावादि चौदह गुणस्थानों द्वारा व गति आदि चौदह मार्गणाओंमें की जा चुकी है। प्रस्तुत खण्डमें उन्हीं जीवोंकी प्ररूपणा स्वामित्वादि ग्यारह अनुयोगों द्वारा गुणस्थान विशेषणको छोडकर मार्गणास्थानोंमें की गई है। यही इन दोनों खण्डोंमें विषय प्रतिपादनकी विशेषता है। इस खण्डके ग्यारह अनुयोग द्वारोंका नामनिर्देश स्वामित्वानुगमके दूसरे सूत्रमें किया गया हैं जिनके नाम हैं---- (१) एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व (२) एक जीवकी अपेक्षा काल (३) एक जीवकी अपेक्षा अन्तर (४) नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग विचय (५) द्रव्यप्रमाणानुगम (६) क्षेत्रानुगम (७) स्पर्शनानुगम (८) नाना जीवोंकी अपेक्षा काल (९) नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर (१०) भागाभागानुगम और (११) अल्पबहुत्वानुगम। इनसे पूर्व प्रास्ताविक रूपसे बंधकोंके सत्वकी भी प्ररूपणा की गई है और अन्तमें ग्यारहों अनुयोगद्वारोंकी चूलिका रूपसे 'महादंडक' दिया गया है। इस प्रकार यद्यपि-खुद्दाबन्धके प्रधान ग्यारह ही अधिकार माने गये हैं, किन्तु यथार्थतः उसके भीतर तेरह अधिकारोंमें सूत्र रचना पाई जाती है जिनके विषयका परिचय इस प्रकार है--

बन्धक-सत्त्वप्ररूपणा

इस प्रस्तावना रूप प्ररूपणामें केवल ४३ सूत्र हैं जिनमें चौदह मार्गणाओंके भीतर कौन जीव कर्म बन्ध करते हैं और कौन नहीं करते यह बतलाया गया है। सब मार्गणाओंका मथितार्थ यह निकलता है कि जहां तक योग अर्थात् मन वचन कायकी क्रिया विद्यमान हैं वहां तक सब जीव बन्धक हैं, केवल अयोगी मनुष्य और सिद्ध अबन्धक हैं।

१ एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व

इस अधिकारमें ९१ सूत्र हैं जिनमें बतलाया गया है कि मार्गणाओं सम्बन्धी गुण व पर्याय जीवके कौनसे भावोंसे प्रकट होते हैं। इनमें सिद्धगति व तत्सम्बन्धी अकायत्व आदि गुण, केवलज्ञान, केवलदर्शन व अलेश्यत्व तो क्षायिक लब्धिसे उत्पन्न होते हैं। एकेन्द्रिय आदि पांचों जातियां, मन वचन काययोग, मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ज्ञान, परिहारशुद्धि संयम, चक्षु, अचक्षु व अवधि दर्शन, सम्यग्मिथ्यात्व और संज्ञित्व ये क्षयोपशम लब्धिजन्य हैं। अपगतवेद, अकषाय, सूक्ष्मसाम्पराय व यथाख्यात संयम, ये औपशामिक तथा क्षायिक लब्धिसे प्रकट होते हैं। सामायिक व छेदोपस्थापना संयम और सम्यग्दर्शन औपशमिक, क्षायिक व क्षायोपशमिक लब्धिसे प्राप्त होते हैं। तथा भव्यत्व, अभव्यत्व एवं सासादनसम्यक्त्व, ये पारिणामिक भाव हैं। शेष गति आदि समस्त मार्गणान्तर्गत जीवपर्याय अपने अपने कर्मोंके व विरोधक कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होते हैं। सूत्र ११ की टीकामें धवलाकारने एक शंकाके आधारसे जो नामकर्मकी प्रकृतियोंके उदयस्थानोंका वर्णन किया है वह उपयोगी है।

२ एक जीवकी अपेक्षा काल

इस अनुयोगद्वारमें २१६ सूत्र हैं जिनमें प्रत्येक गति आदि मार्गणामें जीवकी जघन्य और उत्कृष्ट कालस्थितिका निरूपण किया गया है। जीवस्थानमें जो कालकी प्ररूपणा की गई है वह गुणस्थानोंकी अपेक्षा है, किन्तु यहां गुणस्थानका विचार छोड़कर मार्गणाकी ही अपेक्षा काल बतलाया गया है यही इन दोनोंमें विशेषता है।

३ एक जीवकी अपेक्षा अन्तर

इस अनुयोगद्वारके १५१ सूत्रोंमें यह प्रतिपादन किया गया है कि एक जीवका गति आदि मार्गणाओंके प्रत्येक अवान्तर भेदसे जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल अर्थात् विरहकाल कितने समयका होता है।

४ नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय

इस अनुयोगद्वारमें केवल २३ सूत्र हैं। भंग अर्थात् प्रभेद और विचय अर्थात् विचारणा। अतएव प्रस्तुत अधिकारमें यह निरूपण किया गया है कि भिन्न भिन्न मार्गणाओंमें जीव नियमसे रहते हैं या कभी रहते हैं और कभी नहीं भी रहते। जैसे नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव इन चारों गतियोंमें जीव सदैव नियमसे रहते ही है, किन्तु मनुष्य अपर्याप्त[१] कभी होते भी हैं और कभी नहीं भी होते। उसी प्रकार इन्द्रिय, काय, योग आदि मार्गणाओंमें भी जीव सदैव रहते ही हैं, केवल वैक्रियिक मिश्र[२], आहार[३], व आहारमिश्र[४] काययोगोंमें, सूक्ष्मसाम्पराय[५] संयमें तथा उपशम[६], सासादन[७], व सम्यग्मिथ्यादृष्टि[८] सम्यक्त्वमें, जीव कभी रहते हैं और कभी नहीं भी रहते। इस प्रकार उक्त आठ मार्गणाएं सान्तर हैं और शेष समस्त मार्गणाएं निरन्तर हैं (देखो गो· जी. गाथा १४२)।

५ द्रव्यप्रमाणानुगम

इस अनुयोगद्वारके १७१ सूत्रोंमें भिन्न भिन्न मार्गणाओंके भीतर जीवोंका संख्यात, असंख्यात व अनन्त रूपसे अवसर्पिणी उत्सर्पिणी आदि कालप्रमाणोंसे अपहार्य व अनपहार्य रूपसे एवं योजन, श्रेणी, प्रतर व लोकके यथायोग्य भागांश व गुणित क्रम रूपसे प्रमाण बतलाया गया है। पूर्व निर्देशानुसार जीवस्थानके द्रव्यप्रमाण व इस अधिकारके प्ररूपणमें विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां गुणस्थानकी अपेक्षा नहीं रखी गई।

६ क्षेत्रानुगम

इस अनुयोगद्वारमें १२४ सूत्रोंमें चौदह मार्गणानुसार सामान्यलोक. अधोलोक, ऊर्ध्वलोक, तिर्यग्लोक व मनुष्यलोक, इन पांचों लोकोंके आश्रयसे स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान सात समुद्घात और उपपादकी अपेक्षा वर्तमान निवासकी प्ररूपणा की गई है। पूर्वके समान यहां भी गुणस्थानोंकी अपेक्षा नहीं रखी गई।

७ स्पर्शनानुगम

इस अनुयोगद्वारमें २७४ सूत्रोंमें गुणस्थानक्रमको छोड़कर केवल चौदह मार्गणाओंके अनुसार सामान्यादि पांच लोकोंकी अपेक्षा स्वस्थान, समुद्घात व उपपाद पदोंसे वर्तमान व अतीत काल-सम्बन्धी निवासकी प्ररूपणा की गई है।

८ नाना जीवोंकी अपेक्षा कालानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ५५ सूत्रोंमें चौदह मार्गणानुसार नाना जीवोंकी अपेक्षा अनादिअनन्त, अनादि-सान्त, सादि-अनन्त व सादि-सान्त कालभेदोंको लक्ष्य कर जीवोंकी कालप्ररूपणा की गई है।

९ नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ६८ सूत्रोंमें चौदह मार्गणानुसार नाना जीवोंकी अपेक्षा बन्धकोंके जघन्य व उत्कृष्ट अन्तरकालकी प्ररूपणा की गई है।

१० भागाभागानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ८८ सूत्रोंमें चौदह मार्गणाओंके अनुसार सर्व जीवोंकी अपेक्षा बन्धकोंके भागाभागकी प्ररूपणा की गई है। यहां भागसे अभिप्राय अनन्तवें भाग, असंख्यातवें भाग और संख्यातवें भागसे; तथा अभागसे अभिप्राय अनन्त बहुभाग, असंख्यात बहुभाग व संख्यात बहुभागसे है। उदाहरण स्वरूप 'नारकी जीव सब जीवोंकी अपेक्षा कितने भागप्रमाण हैं?' इस प्रश्नके उत्तरमें उन्हें सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण बतलाया गया है।

११ अल्पबहुत्वानुगम

इस अनुयोगद्वारमें २०५ सूत्रोंमें चौदह मार्गणाओंके आश्रयसे जीवसमासोंका तुलनात्मक प्रमाणप्ररूपण किया गया है। इस प्रकरणमें एक यह बात ध्यान देने योग्य है कि सूत्रकारने वनस्पतिकाय जीवोंका प्रमाण विशेष अधिक बतलाया है जिसका अभिप्राय धवलाकारने यह प्रकट किया है कि जो एकेन्द्रिय जीव निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित हैं उनका वनस्पतिकाय जीवोंके भीतर ग्रहण नहीं किया गया। यहां शंकाकारके यह पूछनेपर कि उक्त जीवोंकी वनस्पति संज्ञा क्यों नहीं मानी गई, धवलाकारने उत्तर दिया है कि "यह प्रश्न गौतमसे करो, हमने तो यहां उनका अभिप्राय कह दिया।" (पृ. ५४१)।

इन ग्यारह अधिकारोंके पश्चात् एक अधिकार चूलिकारूप महादंडकका है जिसके ७९ सूत्रोंमें मार्गणा विभागको छोड़कर गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य पर्याप्तसे लेकर निगोद जीवों तकके जीवसमासोंका अल्प बहुत प्रतिपादन किया गया है और उसीके साथ क्षुद्रकबन्ध खण्ड समाप्त होता है।